आईना–ए–रूह

निशांत प्रकाशन
सिलीगुड़ी (प.बं.)–734435
फोन : 568113

आईना–ए–रूह

निशांत प्रकाशन
विद्युत नगर
द्वारा प्रकाशित
कार्मशियल प्रेस, सिलीगुड़ी
द्वारा मुद्रित
मूल्य : 75 .00 रुपये

भूमिका

प्रयोगवादी कविता और नयी कविता के बाद अकविता ,विचार कविता, अगीत ,अनागत कविता के बीच अपनी गेयता ,छन्दबद्धता और प्रभावोत्पादकता के कारण ही हिन्दी में ग़जल और नवगीत विधा ने विशेष उपलब्धियाँ अर्जित की हैं। आज हिन्दी मे ग़जल की सर्वाधिक धूम है। यूं तो अमीर खुसरो और इनके पूर्व भारतेन्दु हरिश्चन्द तथा महात्मा कबीर से ग़ज़ल की यह परम्परा स्फुट रूप में चली आ रही है परन्तु दुष्यन्त कुमार ने इसे आम आदमी के दिलों से जोडकर जनप्रिय बना दिया। दुष्यन्त ने कदाचित् अपने द्वारा भोगी गयी पीड़ा को इन पंक्तियों में कितनी कुशलता से सर्वजनीन बना दिया है –

" यहाँ दरख्तों के साये में धूप लगती है –
चलो यहाँ से चलें और उम्र भर के लिए।। "

सचमुच दुष्यन्त जी चले गए परन्तु उनके समकालीन एवं परवर्ती कवियों ने जिस ढंग से ग़ज़ल के परचम को उपलब्धियों की ऊँचाइयों तक पहुँचाया है – वह सचमुच श्लाघनीय है। आज हिन्दी ग़ज़ल पत्र–पत्रिकाओं से लेकर एकल संकलनों और संयुक्त संकलनों तक छन्दो बद्ध कविता के पाठकों के मन पर छा गयी है। हिन्दी ग़ज़ल को लेकर अनेक शोधकार्य हो चुके हैं जिनमें मुझ अकिंचन के साथ–साथ डॉ. सरदार मुजावर ,डॉ. जे.पी.गंगवार ,डॉ.नीलम पूर्वे ,डॉ.सादिका नवाब ,डॉ. शशि जोशी आदि का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। हिन्दी ग़ज़ल के लिए परम्परागत बहरों की जगह हिन्दी छन्दों के अनुशासन पर बल देते हुए हिन्दी ग़ज़ल के लिए नया व्याकरण तलाश करने का अभूतपूर्व कार्य

डॉ. कुँअर बेचैन ,माधव मधुकर ,अशअर उरैनवी ,शारिक जमाल आदि ने किया है।

हिन्दी गज़ल का प्रथम विद्यार्थी होने के नाते मैंने पन्द्रह–पन्द्रह कवियों के संयुक्त गज़ल संग्रह ' हिन्दी गज़ल पंचदशी ' के नाम से जिन पाँच भागों का सम्पादन–प्रकाशन करने का विनम्र प्रयास किया है ,वे आजकल खासी चर्चा में है।

आज हिन्दी गज़ल ने अपना शिल्प निर्धारित कर लिया है आज उसके पास समीक्षा के अपने मापदण्ड भी हैं।

हिन्दी गज़ल की महक आज किसी एक प्रदेश तक सीमित न रह कर देश–विदेश तक समान रूप से काव्य–परिवेश को गन्धायित कर रही है।

इसी परिप्रेक्ष्य में श्रीमती रंजना श्रीवास्तव ' रंजू ' का नाम पश्चिमी बंगाल के सिलीगुड़ी शहर से लिया जा सकता है। उनका जन्म क्षेत्र उ. प्र. का गाजीपुर नगर रहा है। सिलीगुडी वाकई बडी खूबसूरत जगह ,जहाँ से कंचन जंगा के हिमाच्छादित शिखर स्पष्ट दिखाई देते हैं। कवयित्री रंजू जी वहीं से " सृजन पथ " नामक स्तरीय साहित्यिक पत्रिका का संपादन–प्रकाशन करती हैं।

रंजू जी की गजलें भी सिलीगुडी की तरह आकर्षक और खूबसूरत हैं। यह गज़लें आधुनिक परिवेश में व्याप्त सामाजिक ,आर्थिक ,राजनीतिक एवं बहु आयामी विसंगतियों व विद्रूपताओं को परत–दर–परत उकेरते हुए पाठको के समक्ष आम–आदमी के यथार्थ जीवन को प्रस्तुत करती हैं।

यह गज़लें कवयित्री की आत्मा का प्रतिबिम्ब हैं। अनुभूतियों का लम्बा सिलसिला ही इनकी गज़लों की उत्पत्ति एवं अस्तित्व का अंग बन गया है। अपनी गजलों के माध्यम से उन्होने व्यक्तिगत पीड़ा को कुशलता पूर्वक सार्वजनिक पीड़ा के रूप में परिणित कर दिया है । इनकी पीडा में पाठक अपनी पीड़ा का अनुभव सहज ही करने लगता है।

उदाहरणार्थ कुछ शेर देखें –

" हालात की बात यूँ छिड़ी है तो –
मैने काँटों में घर बनाया है।। "
ज़र्रा – ज़र्रा बिखरती रही हूँ मैं
बर्दाश्त की हद तक मुझे रुलाया है।। "

\+ + +

" इश्क के सीने पर गहरे घाव हैं ऐसे लगे–
प्यार के दामन में अब ,कोई कली खिलती नहीं।। "

\+ + +

" ये सही है हम सदा उनके लिए मिटते रहे –
वो भला क्यों हों परेशां घर उजड़ जाने के बाद।। "

आम आदमी की जिन्दगी से लिए गये कुछ पहलू कवयित्री की ग़ज़लों में कितने मार्मिक और प्रभावोत्पादक बन गए हैं। देखिए –

" हाथ खाली ,पेट खाली ,जिन्दगी भी –
मिल गए हैं धूल में अरमान सारे।। "

\+ + +

" पूछो मत शबनमी मुस्कानों से –
भीतर की हालत कितनी खस्ता है।। "

\+ + +

" भूख से गुमसुम पड़ी गठरियों के –
जिस्म में हरारत अब भी है।। "

आम आदमी की ज़िन्दगी को कवयित्री ने दो पंक्तियों मे कितनी जीवन्तता से परिभाषित किया है ,जरा देखिए –

" एक चिन्गारी छिपाने के लिए
राख बनती जा रही है ज़िन्दगी।। "

इतना ही नहीं आम आदमी से खास आदमी बनते हुए लोगों की मानसिकता का चित्र कवयित्री ने बड़ी सफलता के साथ खींचा है। यथा –

" बे बात ,बेवजह ही , अकड़े हुए हैं लोग –!
गुरूर की जंजीर मे जकडे हुए हैं लोग ।। "

आज समग्र परिवेश ही हिंसा , बलात्कार , अपहरण और आतंकवाद के कहर से पीड़ित है। इनके बीच जन–जीवन का एक चित्र उकेरते हुए कवयित्री प्रश्न करती है –

" खामोश जुबानों पर लगे ताले हैं ,
खौफ में डूबा शहर किस्सा कैसा ? "

आधुनिक राजनीति और देश –भक्ति पर रंजू जी के कुछ शेंर सचमुच सराहनीय बन गए हैं। यथा –

" जमात है रंगे सियारों की –
अवाम का भटकना वाजिब है।। "

\+ \+ \+

" वतन के गद्दारों की साजिश चल रही –
दिलों में शहादत अब भी है।। "

\+ \+ \+

' हर एक शहर लहुलुहान ,जख़्मों के साये में –
सुकून का कूचा नहीं , इस पूरे हिन्दुस्तान में ।। "

कवयित्री के कुछ शेर जन–मन में सकारात्मक चिन्तन एवं जीवन मूल्यों के प्रति आस्था के स्वर भरने में सफल हुए हैं। यथा –

" गैरों के आँसू पोछने की ख्वाहिश में–
खुद के अश्कों को पी रहा होगा ।। "

\+ + +

" दूसरों की आग में कभी जल के देख –
पत्थर है तू तो पिघल के देख।। "

निःसंदेह कवयित्री रंजना श्रीवास्तव ' रंजू ' की यह ग़ज़लें इनकी आत्मा का दर्पण हैं जिसमें समग्र युगीन परिवेश ही अपने यथार्थ स्वरूप में प्रतिबिम्बित हुआ है।

प्रस्तुत कृति के लिए कवयित्री रंजू का हार्दिक बन्दन–अभिनन्दन करते हुए मैं आशान्वित हूँ कि उन्हें रसज्ञ पाठकों का भरपूर स्नेह और आत्मीय भाव सहज ही प्राप्त होगा । भविष्य में कवयित्री रंजना श्रीवास्तव ' रंजू ' से और अधिक स्तरीय, परिष्कृत तथा कलात्मक ग़ज़ल कृति की अपेक्षा की जा सकती है ! शत–शत शुभ कामनाओं सहित।

(डॉ रोहिताश्व अस्थाना)
ऐकान्तिका
निकट बावन चुंगी
हरदोई – 241001 उ प्र
30. 11. 2001
दूरभाष –05852 –, 32392

आईना–ए–रूह

मेरी गजलें मेरी रूह की वो अक्श हैं जिनमें एहसासात के वो सारे लम्हें कैद हैं जो मेरे दिल की आवाज बनकर कागज की सरज़मीं पर धडक उठते हैं। मैं इनके जरिए खुद से, अपनों से, गैरों से, समाज से और वतन से रूबरू होकर अपना दर्द बयान करती रहती हूँ। जहाँ जख्मो का अँधेरा है, तो उम्मीदों के रोशन चराग भी हैं , गमों की बदलियां है तो खुशियों की बरसात भी है ,अश्को का सैलाब है, तो हँसी के झरते हुए झरने भी हैं ,हार का दर्द भी है तो जीत की खुशियाँ भी हैं, चुप रहने की बेबसी है तो जंग का ऐलान भी है ,बुझी हुई राख है तो दहकते हुए शोले भी हैं। हमारी गजलें समाज का वो आईना हैं – जहाँ हमें दरकते हुए जख्मों के निशानात साफ नजर आते हैं। ये जख्म हमारी व्यवस्था की तंगहाली, हमारी संस्कृति पर लगे पाश्चात्य सभ्यता के बदनुमा धब्बे और भोगवादी संस्कृति की देन हैं। हमारी गुजारिश है कि आप भी इन जख्मों को महसूस करें, सिर्फ महसूस ही न करें बल्कि उन व्यवस्थाओं का विरोध भी करें जो समाज को गहरे अंधेरे में धकेल रही हैं। इन गजलों एवं शेरों की तकदीर में वो उजाला बख्शें जो हिन्दोस्तान की सरज़मीन पर अमनो चैन ला सकें ,प्यार व मुहब्बत की नेमत के जरिये नफरतों के बदनुमा धब्बे खुद ब खुद रुख़सत हो जायें और तब हम फ़ख्र से कह सकें

– "सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा।"

रचना श्रीवास्तव 'रचू'

अनुक्रम

अब तुमसे ज़माने की बात क्या कहे
बिगडे हुए दिल के हालात क्या कहें।।

जब सामने होता कोई, होती मुहब्बत रूबरू
परदे की ओट के जज़्बात क्या कहें।।

न समझ सकी कौन अपना, ग़ैर कौन महफिल में
उलझे हुए धागों से, मन के ख्यालात क्या कहें।।

दरिया के बीच डाल कश्ती, मंझधार में हम चल दिए
तूफान के गुंजाइशों के, वो लम्हात क्या कहें।।

पिघले हुए शीशे सा कोई दर्द करवट ले रहा
शीशा-ए-दिल के रूबरू ज़ख्मों की बात क्या कहें।।

बरसात का मौसम घिरा, अश्कों की झड़ी लग गयी
संग में बिजलियों की सौग़ात क्या कहें।।

मेरे दर्द के पैमाने में तनहाइयों की भीड है
कुदरत की लकीरो में सोयी मेरी तक्दीर है।।

गुंजाइशो के रूबरू, पर्दानशीन आरजू
रुसवाइयों की जंग में ,कई आदतें शरीर हैं।।

जब भी कदमबोसी को मैं ,आगे बढी किसी ख्वाब के
बन कहंकशां बिखरे थे रंग ,खोई मेरी जागीर है।।

हारी नहीं किसी जंग में , जीत भी हासिल नहीं
हिम्मत जुदा भी ना हुई , ताकत , लगी जंजीर है।।

मंजिल को पाने के लिए रस्ते पे मैं बढती रही
छूने लगे जब हाथ तो बेचैन राहगीर है।।

हम क्यों कफ़न ओढ़ें जो जिन्दा साँस है
हम क्यों जहर पीयें कि जब तक आस है
हौसला बुलन्द है जब राह में
दिल में पुख़्ता सा कोई विश्वास हैं ।।

***

मत करो तुम स्नेह का उपक्रम जरा भी
अब न डोलेगा हमारा मन जरा भी
स्नेह का हर सत्य अब उघड़ा पड़ा है
आईना ही टूटकर बिखरा पड़ा है ।।

***

हौले से कह दो है क्या तुम्हारे रूह के भीतर
चेहरा बदल के पाँव ना रखना ज़मीन पर
देना अगर है चोट तो सीधे ही करना वार
लटका नहीं देना हमें छिपकर सलीब पर ।।

***

क्यों रूठकर मुझसे जुदा तुम इस तरह पड़े हुए
हम तो तुम्हारे दर्द से दिल तलक जुड़े हुए
ये अश्क जो रुखसार के सीने में हैं ढुलक रहे
सैलाब बनके मेरे दिल के रूह में पड़े हुए।।

दिल को कुछ ऐसा लम्हा याद आया देर तक
धुंध यादों की लिए , जिसने रुलाया देर तक ।।

वक़्त की रफ्तार पे ना लग सकीं पाबन्दियाँ
दौडती रही थी मैं , उसने भगाया देर तक ।।

हो के जब मायूस , कुछ लोग तन्हा चल दिए
तो संग के जज़्बात ने ,उनको सताया देर तक ।।

सुर्ख़ियों में ख़बर थी कत्ल कोई हो गया
क़ातिल का चेहरा न कोई भांप पाया देर तक ।।

ज़िन्दगी की जंग में , इन्सानियत का ख़्वाब ले
सैलाबे-दिल के दर्द का रोया था साया देर तक।।

हैरान हैं वो खो के खुद को ,फ़ैली हुई इस भीड में
जिनके करीब थे रहे , न पहचान पाया देर तक।।

जज़्बात का मौसम घिरा जब मुश्किलों के दौर में
मन की बदलियों ने उनको रुलाया देर तक।।

भा गयी दिल को तभी मरहम लगाने की अदा
ज़ख़्म को छेडो नहीं , पैग़ाम आया देर तक।।

करगिल संदर्भ में लिखे गये कुछ शेर

(1)

हम तो कफ़न बाँधे हुए , चलते रहे बस शान से
धोखे की बू आती रही , तेरे ही गिरहबान से
हम तो वतन के वास्ते मिटते रहे , हर एक पल
पर क्या हुआ हासिल तुम्हें यूं हाथ धो के जान से।

(2)

औक़ात तेरी ये सुनो मरते रहे नक़ाब में
छुप के ही बार बस किया, चोरो के जिस अन्दाज़ में
सीने पर गोली खा के हम तो फ़ख्र से हैं चल दिये
तेरा तो मरना भी हुआ , छिपते हुए अन्दाज में।

(3)

मिटने का जज़्बा साथ है कितनी खुशी की बात है
अब ग़म नहीं किसी बात का, वतन की खुश्बू साथ है
तन्हा नहीं सरहद पे तुम, हम कर रहें हैं बस दुआ
तुम जीत का सेहरा लिए , लौटोगे हर हालात में।

(4)

जब तिरंगा बन कफ़न , सहलाता तेरी देह को
अहसास देता है हमें , वतन से तेरे नेह को
रिश्ते कई छूटे तो क्या कोई ग़म नहीं वीरो सुनों
तुम तो अमर हो रूह में धड़कन बने वीरो सुनों।

(5)

अब तो भरोसे का कोई न उठ सकेगा बुलबुला
नफरत की आग है जली ,चलता उसी का सिलसिला
तुमने तो सौदा ही किया , जज़्बात की ना क़द्र की
ज़ख्मी रहा मन अब तलक धोखे का पाया जो सिला।

(6)

वतन से उम्दा चीज कोई दिल के दरमियां नहीं
लहू में जो उबाल है , उसका कोई बयां नहीं
गर साज़िशों के खेल में बर्बाद होगा मुल्क तो
लश्करे सैलाबे दिल थमने को है , मकां नहीं
हम रोक लेंगे आंधियो के बढ़ते हुए हर क़ाफ़िले
ये है हमारी जुस्तजू , कोई लेगा इन्तहां नही।

(7)

ये वतन मेरा ईमान है, , कुर्बान इस पे जान है
बहता लहू हर जिस्म मे, शान इसकी आन है
फिर क्या वज़ह लूट ले ,इस मुल्क की कोई बस्तियॉ
बहता लहू बन जायेगा दुश्मन के दिल मे बर्छियां।

(8)

तुम हो बड़े कमसिन समझ , हर बार खाली हाथ लौटे
कोशिश बहुत की ,पर न मिट्टी को लिए तुम साथ लौटे
कैसा अभागा मन तेरा, ख़्वाहिश लिए बस डोलता
सुनता नहीं आवाज़ सच की पागल बना हर बार लौटा।।

नीयतों की रूह से ख़तम व्यापार होगा
तो दिल में सुकून आँखों में प्यार होगा।।

ख़ुदगर्ज़ी के आलम से जागेगी जब इंसानियत
तो लोगों का हर लम्हा त्योहार होगा।।

लहू के लिए ज़मीरे लहू तड़पेगा जब
मजहबे –जंग में न कोई निसार होगा।।

उल्फत लिए दिल मे गले रूहें मिलेंगीं
कटार अब न कोई ,दिल के आर–पार होगा।।

नफरत की धुंध देगी , रोशनी जब
दिल में दर्द का नहीं गुबार होगा।।

मिल के इन्सानियत बाँट लेगी दुख हर
पतझर का हर मौसम बहार होगा।।

रोटी सभी की ख़ातिर होगी जब मयस्सर
सोचो , कितना खूबसूरत संसार होगा ।।

नहीं परदे की आड मे बिकेगी इज्जत
जिस्म का नहीं कोई बाज़ार होगा।।

कैसे जंग जीतेगा , ईमान आज रावण से
सत्य के चौराहे पर ,जब राम ही अकेला हो।।

सीता फँसी शिकंजे में , लंकेश अपने धंधे में
सोने की चाह में बिक गयी ,जब बानरों की सेना हो।।

जब अनगिनत दशानन हो ,सोया हुआ प्रशासन हो
सच को सच भी कहने में ,सैकड़ों झमेला हो।।

ईश्वर के बन्दे खुद को ही ,जब ईश्वर समझते हों
अहम् की कटार से , आतंक का ही खेला हो।।

जब न्याय – अन्याय के , अर्थ ही बदल गए हों
मान – मर्यादा के आँसुओं का मेला है।।

खुद से खुद को ही , छिपा के रख ,लिया है
उघड़े हुए जज्बात को ही ढक लिया है
जानता मासूम सा ये दिल दीवाना
जख़्म फिर से छेड़ता , ज़ालिम ज़माना

***

पक रहे चावल पतीले में मगर
बुदबुदाते हैं ज़रा कुछ शोर कर
ढक के इनको भी ज़रा तो देखिए
पर्दा उठा देंगे दहलीज़ तोड़कर ।।

***

सावन के झूलों का मिजाज देखिए
बारिश का भींगा सा शबाब देखिए
भौरो का गीत सुन के जो हवा चली
फूलों का खिलना बेहिसाब देखिए।

रुसवा किया कई बार मुझको इस ज़माने ने
टूटा था बार–बार दिल आँसू बहाने में।।

नफरत के कूचे में ,उल्फत के नक़ाबपोश थे
तो भला फिर देर क्या थी जान जाने में।।

मुस्कुरा पड़े थे वो रुबरू मुझे देखकर
जानती थी मैं ज़हर , उनके ठिकाने में।।

पेशानी पर सिलवटें , उभरी जरा कुछ सोचकर
उलझन भरी किसी सोच को भीतर छिपाने में।।

देते रहे उल्फत मुझे ऐसी अदा से भीड़ में
तनहाइयों में साथ दे जो , जी जलाने में।।

जब रूह से ही , रूह की पहचान आज खो गयी
तो क्यों निभाएं साथ वो यारी निभाने में।।

उजडा पडा है आज , दिल का मेरे ये वतन
कि चोट भी लगती नहीं गोली के खाने मे।।

दर्द के मैख़ाने में पैमाना क्यों खाली पड़ा
क्यों ज़ार–ज़ार रोये मन आके शराबखाने में।।

अब क्या कहें , तन्हाइयो की दास्तां
खाली पड़ा दिल का ,मेरे अब तक मकां।।

बढते रहे तूफान की उम्मीद में
आया तो पतझर हो गया था बागवां।।

शमां बुझाने रात के आगोश में
कबसे खडा था , सामने कोई मेहरबां।।

दरिया किनारे रेत के हम घर बना
खाली सदा करते रहे अपनी ज़ुबां।।

मुठ्ठी मे मैने धूप को कैदी बना
दाग़ झेले जिन्दगी के बदनुमा।।

लहरें हँसी की खो गयीं दरिया–ए–दिल में
उठने लगा बेचैनियो का जब धुँआ।।

खामोश सी राते थीं जब होने लगीं
दिल को तपाया आग पर सोना बना।।

आतंक के माहौल में बेबस परिन्दे हैं
सीने में जलती आग ले चुपचाप बन्दे है।।

काफ़िर को सरेआम इज़्ज़त मिल रही है आज
पिस रहा इन्सान जो हालात मन्दे हैं।।

आतंक के माहौल में जीये जो ज़िन्दगी
उनके उसूलों से अलग कुछ और धन्धे हैं।।

वतन की तानाशाही में मन की हकीकत खो गयी
इन्सानियत जिन्दा कहाँ हर भाव ठंडे हैं ।।

पास की , पड़ोस की ,पहचान आज खो गयी
अजनबी वतन बना मुर्दा बाशिन्दे हैं ।।

हम हैं कि बस हम हैं, यही आरजू दिल में
सबके गले में झूलते स्वारथ के फन्दे हैं ।।

अजीब सी हलचल मची है भीतर में
चुभ रहे जख़्मों के शूल नश्तर में।।

ऊपर का सैलाब है थमा हुआ
तूफान करवट ले रहा है भीतर में।।

मुस्कान की सुर्ख़ियाँ चेहरे पे हैं
दर्द के जज़्बात पिघले अन्दर में ।।

दिल में हैं कैद जो परछाइयाँ
मिलती रहीं हैं जा के लाहो–लश्कर में।।

रेत की ख्वाहिश बिखर के फैली है
लहरों के बीच जाके अब समन्दर मे।।

खुश्बुओं की गली के बाशिन्दे
पल रहें हैं जाके काँच के घर में।।

घर में भी चलने लगीं सियासी चाले
राजनीति के झंडे गडें हैं दफ्तर में।।

फांसीवादी ताकतों की जमघट है
मौत में , जिन्दगी के मंजर मे।।

लहरो का खेल खौफ से है चुप पड़ा
लहू के छींटे फैले मन के सागर में।।

***

चेहरे पर हर, नकाब मैंने देख लिया
टूटा हुआ हर ख़्वाब मैंने देख लिया
फरेब के हर खेल में माहिर सभी,
पर मन का इन्क़लाब मैंने देख लिया ।।

***

मत जलाओ मन की मेरे बस्तियाँ
लें मशालें छल की अपने हाथ में
रोक लेगा मन मेरा तूफान ये
ले भरोसा दिल का अपने साथ मे।।

***

हौसले की बात मुझसे ना करो
हौसला मेरे रूह की पहचान है
जहर के कई घूँट पी मन जी रहा
फिर भी मीठे स्वाद का अरमान है ।।

खुशी अब मिलती नहीं , सावन के आने के बाद
अनगिनत पतझर के मौसम में , उलझ जाने के बाद।।

कारवा का कारवां , मासूमियों की शक्ल में
दर्द दस्तक दे गया है , घाव भर जाने के बाद।।

दिल सम्हलता है तनिक टूटने के बाद भी
क्या करेगा भला , रेशां–रेशां बिखर जाने के बाद।।

ये सही है हम सदा , उनके लिए मिटते रहे
वो भला क्यो हो परेशां , घर उजड जाने के बाद।।

ये जिन्दगी का राज़ है ,वो दर्द से सजा करती
उदासियों की गोद मे पल–पल बिखर जाने के बाद।।

आदमी को क्या पता वो जी रहा किस वास्ते
क्यों चला करती हैं सॉसे , मन के मर जाने के बाद।।

ऐ खुदा तू कर रहम , तस्कीन दे हर दर्द को
वरना मौत आयेगी भीतर जहर जाने के बाद।।

कुछ तो सब्र कीजिए , आग लगाने के बाद
नया घाव जनम ले , पुराना भर जाने के बाद।।

आपकी तबियत भला नासाज क्यों है इस क़दर
फेंकते क्यों ईंट–पत्थर यूँ ,उधर जाने के बाद।।

राहों में बिखरे फूल को बेशक सजदे ना करे
चैन क्यों आता है पर , उनके कुचल जाने के बाद।।

हमें तो समझ नही , समझ सकें हम आपको
पानी पर लकीर खींचते ,भरोसा कुचल जाने के बाद।।

आदमी की जात क्या ,जो दिल की हालत जान ले
खुश सदा होता रहा है ,दाल गल जाने के बाद।।

आप हैं मासूम तो , हम भी नादान कम नहीं
खंजर आप फेंकते , मेरे निकल जाले के बाद।।

नाज़ुक सा कोई ख़्वाब , टूटने लगा है
बेरुखी की चौट का , कंकर लगा है।।

हमने ,संभाला जिसे अहसास के आग़ोश में
पिघला हुआ वो ज़ख्म , अब रिसने लगा है।।

लम्हात के रुखसार पर ,शिकन जो ख़ामोश सी
अन्दाज उसका आज , फिर डसने लगा है।।

हम थे परोमां , हाल दिल का सोचकर
बेघर ख़्याल आ के , फिर बसने लगा है।।

नसीब की फितरत का , खेल क्या कहें
सूने शहर में आज , फिर दफ्तर लगा है।।

यादों के सायों का , फिसलना क्या कहें
ख्वाबों में बसने आज ,फिर मंजर लगा है।।

परछाइयां ग़म की , बसीं आईने में जो
उनके वजूद में , मचलने डर लगा है।।

अब ऐ खुदा हम क्या कहें तकलीफे–ग़म
वक़्त ने फेंका जो पत्थर , सर लगा है।।

एक चिन्गारी , छिपाने के लिए
राख बनती जा रही है, ज़िन्दगी।।

खुद की साँसों को गलाने के लिए
आग बनती जा रही है ,जिन्दगी।।

गम परेशां हो के तन्हा चल दिया
दाग बनती जा रही है ,ज़िन्दगी।।

लुट रहा मन अश्क की बरसात में
घाव जनती जा रही है जिन्दगी।।

फूल की ख्वाहिश में हुई बरबादियाँ
देखो सिसकती जा रही है जिन्दगी।।

खुश्बू बिखर के दिल में मचलने लगी
ख़्यालात बनती जा रही है जिन्दगी।।

दरिया किनारे प्यास लेके , हम खडे
मुँह चिढाती जा रही है ,ज़िन्दगी।।

शीशाए दिल में ज़ख़्म की परछाइयाँ
देखो बिखरती जा रही है जिन्दगी।।

बरसात के मौसम में भीगा आज दिल
कैसी उफनती जा रही है जिन्दगी।।

सोच लो फिर से , ज़माना क्या कहेगा
कोई अपना या बेगाना , क्या कहेगा।।

तुम चले हो तोड़ने रिवाजों की दीवार को
रूह में दफ़न जो , क़िस्सा , पुराना क्या कहेगा।।

नफ़रत के बीज बो के जिसने धर्म को पैदा किया
उसका गला घोटोगे तो दुनिया का ताना क्या कहेगा।।

मौत के सजदे मे झुक गयी हैं , जहाँ की ताक़तें
ज़िन्दगी के सामने ,तेरा सिर झुकाना क्या कहेगा।।

लहू की हर बूँद में , पहचान सबकी एक सी
फिर भला ये धर्म व जाति का बाना क्या कहेगा।।

प्यार की वो आग जब दिल के अन्दर जल रही
दे के नफरत की हवा , उसको बुझाना क्या कहेगा।।

चंद सिक्कों के लिए , बिकती हैं नंगी चाहतें
जिन्दगी को यूं भला , तेरा आज़माना क्या कहेगा।।

दिल ने देखी थी , सुबह की रोशनी
खिल पड़ी थी , मन की मेरे चाँदनी।।

रेत में चलकर , थके थे पाँव जब
दरिया किनारे जा खड़ा था आदमी।।

फेर नजरें , देते थे दिल को सुकून
कैसी भली थी , वो भी तेरी दुश्मनी।।

रात में बतियाते , तारों का हुजूम
झिलमिलाते ख्वाब जिनमे शबनमी।।

छोटी सी चिन्गारी जला के आशियाँ
रंग सब पर पोत , आयी मातमी।।

टूटकर बिखरे हुए , शीशे सा दिल
बार –बार जोड़ता है , आदमी।।

चोट को चुपचाप , सहना सीख मत
लोग कह देंगे तुम्हें कमसिन समझ
तनहाइयों में दर्द होगा रूबरू
ग़ज़ल के जरिए ही इसे निकाल दे।।

***

जलके खुश्बू से नवाजे अगरबत्ती
फूल भी मुरझा के देते , गंध हैं
क्या तेरी औकात इतनी गिर गयी
कि जख्म देना ही तुझे पसंद है।।

***

करके , शरारत हवा ने जुल्फें बिखेरी
बहुत ही मासूम थीं , पलकें घनेरी
एक तबस्सुम सुर्ख लब पे खामोश थी
क़त्ल होने में भला ,कितनी थी देरी।।

***

तुम मत मुझे आवाज दो मैं सुन रही हूँ धड़कने
जब साज़िशें हों ग़ैर की , अपना कोई कैसे बने
तुमने हमेशा दर्द का , तलवार ले सौदा किया
हमने उसी की ढाल ले गीतों में इज़ाफा किया।।

***

देखा तुम्हें   करीब से , तो क्यों मुझे ऐसा लगा
कि हो बहुत उलझन में तुम ,सोचकर धक्का लगा
जो मौत को तक़दीर से ले छीन , मुट्ठी में करे
तदबीर जब घायल खड़ी ,तो आज तन्हां सा लगा।।

***

तुम हो बडे पुख़ा जिगर , हो चोट करते गीत पर
ऐसे बिखर जायेगा ये , साँसों का सुन्दर सा शहर
हर एक पल की मौत में , इस जिन्दगी की धड्कनें
आज़ाद बहने दो इन्हें, घोलो नहीं , इनमें ज़हर।।

***

इक – इक कतरा दर्द का , बयां करे ग़ज़ल
साँसों पे रक्खी आग से पिघला करे ग़ज़ल
कैसे कहें ग़ज़ल को हम , रस्ता दिखायेंगे
जब रास्ते की ठोकरें , सहा करे गज़ल।।

***

सरहदें ज़ज़्बात की ना , कोई तय कर पायेगा
जो अश्क में डूबा हुआ वो ही इसे पिघलायेगा
गैरों की क्या औकात जो अपनी ग़ज़ल के रूबरू
इल्म की सरहद बना ,मेरे गीत को झुठलायेगा।।

***

ठोकर लगी कई बार मैं सम्हल गई
पर दिल की मेरी चोट थी पिघल गयी
अब घाव गज़ल बनके हैं बहने लगे
जब चोट ज़माने के हम सहने लगे।।

***

रोकता क्यूं है , जमाना मार पत्थर
हूँ अगर, पापी तो , मुझको मार पत्थर।।

ईमान, मज़हब से जुदा . हो , रोज, बिकते लोग हैं
सच की खातिर मैं बिकी हूँ , हो सके तो मार पत्थर।।

गैरों के घर को फूँककर , रोशनी करें दयार में
जलते घरों को है बचाया हो सके तो मार पत्थर।।

अस्मत लुटाकर बेटियाँ अब जी रहीं श्मशान में
जंग को उनको पुकारा, हो सके तो मार पत्थर।।

आज सबके मन का पाकीज़ा सुकून खो गया
ढूँढने अब मैं बढी हूँ , ले उठा ले मार पत्थर।।

बाज़ार की रंगीनियों की खुशी जो हासिल तुम्हें
उनके सजदे में झुकी हूँ , तू उठाके मार पत्थर।।

ऐ खुदा तू बन रहम दिल ,दे दे माफी काफ़िरों को
बेगुनाह इन्सान पर , न उठाके मार पत्थर।।

कानों में रूई डालकर सोया करेंगे लोग
बेवक्त, बेहिसाब अब, रोया करेंगे लोग।।

जलने लगेगा घर कोई, जब साज़िशों के खेल में
बन्द दरवाज़ों के पीछे, देखा करेंगे लोग।।

बचते रहेंगे काफ़िरो से, ख़ौफ़ का आलम लिए
यूं ज़हनी सुकून को, खोया करेंगे लोग।।

मुल्क की तबियत की फ़िक्र, कोई क्यों करे
नासाज़ है तबियत तो भला क्या करेंगे लोग।।

खुदग़र्ज़ बन के दिल कभी, चैन है पाता नहीं
बेचैनियो का बोझ, ही ढोया करेंगे लोग।।

अपनी हिफ़ाजत के लिए गैरों से होके यूँ जुदा
बबूल के ही पेड़ बस बोया करेंगे लोग।।

हर ओर विवशता है,
कोई रोता है, कोई हँसता है।।

काँटे बिछे जिनके रूह के दरमियां
उनके भी हाथों मे गुलदस्ता है।।

पूछो मत शबनमी मुस्कानों से
भीतर की हालत कितनी ख़स्ता है।।

गम को छिपाने की कोशिश मे
दर्द का कोई, गाँव बसता है।।

ढोंग करने का हुनर सताता है मुझे
अपनेपन का आलम डसता है।।

सख्त सी जमीन की उम्मीद में मन
दलदल में भीतर तक धँसता है।।

गम से पड़ी है किताबे जिन्दगी
तकदीर का कैसा ये खाली बस्ता है।।

***

बात खुलना बहुत ज़रूरी था
ज़ख्म मिलना बहुत ज़रूरी था
सिसकियाँ होठों के बाहर जाये ना
होठों का सिलना बहुत ज़रूरी था।।

***

सदियाँ लग जाती हैं
घर को बसाने में
इक पल भी नहीं लगता
नींव बिखर जाने में।।

***

रिश्ते नए बनाने की,
आदतें तो अच्छी हैं
पर कब्र हो पुराने की
ऐसा ज़रूरी तो नहीं ।।

तौहीन मत कर दिल मेरे मासूम से किसी घाव का
ना ही पिघल बनके नरम किसी शोख़ से दबाव का
ये ज़िन्दगी है , देगी हर पल ठोकरें भी , जीत भी
ग़र आज दिल घबरा रहा ,कल पायेगा उम्मीद भी।।

***

बाजू में बैठे लोग बेगाने हुए
जो थे कभी अपने , वो सयाने हूए
मेरे रहम की छांव में कल तक रहे
अजनबी अब उनके ठिकाने हुए ।।

***

मत छेड़ मेरे जख़्म ये बस मेरे हैं
साये में इनके बंद , जो अँधेरे हैं
वा` है मेरे ज़ज़्बात के जिन्दा क़ब्र
हम फूल चढ़ाते , रहेगे उम्र भर।।

***

क्यों शरारत दिख रही नज़र में है
क्या कहीं बिजली गिरी शहर में है
क्यूँ हैं, खामोश लब पे बिजलियाँ
क्या कहीं छायेगीं फिर से बदलियाँ।।

***

वक्त के रुखसार पर लम्हों का, जो नक़ाब है
चिलमन के पीछे रूह में ,दिलकश जो शबाब है
वो नरमियों के देश का कोई खिला गुलाब है
वो रोशनी है रूह की, नज़रों का आफताब है।।

***

रस्मो – रिवाज के कन्धे पर है कफ़न
धर्म व समाज से, बिकता है ये वतन
अब शराफ़त, छोड़कर ये घर चली गयी
तहज़ीब जिसका नाम था दौलत चली गयी।।

***

आँखें बनी समन्दर हों
दर्द कोई अन्दर हो
कुछ लम्हें पास आते हैं
जो दर्द देके जाते हैं ॥

***

कह देना ,तुममें कोई फन नहीं
बात उनके लिए कानून है
खुद के भीतर [illegible]
जिन्हें देखना नहीं [illegible]

रुसवाइयों के बीज से हमने फसल पैदा किया
घावों से लिखकर गीत हमने दर्द का सौदा किया
इक पल कराहा मन मेरा , जब चोट जमाने ने दी
पिघले हुए ज़ख़्मों से ही लिखने का इरादा किया।।

***

बेरहम बनके ग़ज़ल को रौंद मत
पढ ले टीसों से भरे नाज़ुक से खत
दिल की इक–इक आह का अन्दाज़ पढ़
जज्बात की दुनिया को ना ,इल्मों से गढ़।।

***

अश्क की बरसात में भीगें जो हम
दिल को थोडा सा करार आ गया
रूठकर तन्हा पड़ा था मन मेरा
फिर से उसको उन पे प्यार आ गया ।।

बुझा के चराग , वो छिप गये मकान में
हादसों की आग अब गरम जहान में।।

भीड़ में वजूद है , घुल – मिल गया
मन तन्हा सा पड़ा , अब भी सूनसान में।।

सुर्खियों में आज , कत्लेआम के चर्चे
भींगी खड़ी इन्सानियत, लम्हों के दास्तान में।।

मुल्ज़िम करार ग़ैर को ,छीटाकशी करने लगे
झाँककर देखा नहीं ,अपने ही गिरहबान में।।

ज़ुल्मों–सितम की सदा ,अब बुलन्द हो गयी
सब न्याय की बाते करें , दबी ज़ुबान में।।

कालिख पुती ज़मीर पर ,ज़ुल्मों के साये में
ढूँढा नही हीरे को पर ,कोयले की खान में।।

हर एक शहर लहुलुहान , जख्मों के साये में
सुकून का कूचा नहीं, इस पूरे हिन्दुस्तान में।।

झूठ से पर्दा उठाकर देखिए
सच्चाइयों का आईना अब देखिए।।

देखिए दरिया के सीने में छिपी हुई आग को
मौजो के खेल में, दहकता समन्दर देखिए।।

दिल की महक बन धूप में खिली हुई थी आरजू
बरसात में भींगी उदासी का, अल्हडपन देखिए।।

जो चीज अपनी खो गयी है, ज़िन्दगी के सफर में
वो कल मिलेगी चाह ये, मन का लडकपन देखिए।।

आरजू के फूल की, उम्मीद मे, फैला हुआ
काँटो से बिंधता उनका तार–तार दामन देखिए।।

पत्थरो को भी गलाकर, मोम में बदल देगी
इन्सानियत की आग, सीने में जलाकर देखिए।।

मौकापरस्तों की यहाँ, तन्हां पड़ी हैं ख्वाहिशें
जो रोके जी हल्का करे ना,वो उदास जीवन देखिए।।

अपने ही लालच के शिकंजे मे फँसा मासूम मन
दिल में तड़पती चाह का, आपस मे अनबन देखिए।।

जो ठीक हो बस वो करें, ये सोचकर आगे बढें
फिर क्या सही है क्या गलत ना होगी, उलझन देखिए।।

मेरे दिल की धड़कनों का सबब मत पूछो
बिखरा ये कहाँ, कितना, कब, मत पूछो।।

वक्त की लकीरों से, मुसलसल, उलझता ही रहा
स्याह रातों में ढूँढे है सब मत पूछो।।

अश्क जमने लगे, जब इसकी ज़मीं पे आके
सुकून से दुनिया, रोये है रब मत पूछो ।।

गैरों का गम सीने में ले के तनहा ही रहा
नफरत ही समेटी, अब तक, मत पूछो।।

जख़्म जमाने के धड़कन में छिपे हैं अब भी
दिल के अश्कों पे हँसते रहे सब, मत पूछो।।

हर ओर देखा गम में नहाये हुए हैं लोग
राहे–सफर में फरेब , खाये हुए हैं लोग।।

दुख दूर करने की छड़ी मिलेगी नहीं बाज़ार में
ज़ख़्म के पैबन्द छिपाये हुए हैं लोग।।

सुकून की चाहत लिए भटका करें गली–गली
मंज़िल का ठिकाना , पूछ घबराए हुए हैं लोग।।

इश्क , मुहब्बत अब बिका करे बाज़ार में
रिश्तों की दहलीज पे , भरमाए हुए हैं लोग।।

कौन अपना , ग़ैर कौन, उलझनें बढी हैं अब
खुद के हालात पे शरमाऐ हुए हैं लोग।।

ऐ खुदा तू ही बता , क्या हुआ है शहर को
आतंक का माहौल ले छाए हुए हैं लोग।।

ईमान , पाकीज़गी दामन से दूर हो गयी
पैसे की चाह मे , अकुलाए हुए हैं लोग।।

लाठी व सिर्फ भैंस की बातें करें सभी
दहशत भरी दरिन्दगी ,पनपाए हुए हैं लोग।।

इन्सान कब से बन गया , इन्सान के लिए ज़हर
क्यों वहशियत की आग सुलगाए हुए हैं लोग।।

ज़ज़्बात का जो शोख रंग था , ढल गया
मौसम जो कल था , आज वो बदल गया
बहुत थी मासूमियत जज़्बात के रुखसार पर
तीखी हुई जो धूप तो अहसास जल गया।।

***

तुम दर्द देके पूछते , नमी सी क्यों आँखो में है?
हम दर्द पी छुपा रहे , जो जख्म इन साँसो मे है
चेहरा जो जख़्मों से भरा ,चिलमन की आड में खडा
तुम ढूँढते जिसे सामने ,वो गम तो अहसासो में है।।

***

तुम चले गये घर छोड़कर पर मिल नहीं सके गले
जो पास रहकर दूर थे , वो दूर जाकर क्यों खले?
गुंजाइशें जब तक रहीं , तुम पडे रहे थे जिद लिए
उम्मीद अब कफ़न पहन तरसा करेगी दिन ढले।।

क्यों यहाँ ऐसी भी हैं ऊचाइयाँ
छू नहीं सकता जिसे इन्सान है।।

हार है बस जिसके हिस्से का वजूद
आदमी वो आज तक नादान है।।

जीत ले जो मन की हारी बाज़ियाँ
वो ही है परमात्मा, भगवान है।।

चाहतों की एक लम्बी लिस्ट ले
फिर रहा मन का ये शैतान है।।

इक अधूरी प्यास है दरिया-ए-दिल में
हर कोई इस बात से अन्जान है ।।

बाँट लेने को नहीं अब, सुख व दुःख
जानते सब, काम ये महान है।।

ख़्वाब की गुंजाइशों के पर कटे
पर अनोखी मन की ये उडान है।।

बिक रहे जज़्बात के अनमोल मोती
जिस्म अब बाजार, मन दुकान है ।।

मत कहो कि चैन की दुनिया बसेगी एक दिन
चैन की आबो–हवा इस मुल्क में चलती नहीं।।

जख़्म खाकर इस तरह दिल अब पके हुए
बुरी से बुरी बात भी ,अब दिल को है खलती नहीं।।

बेचैनियों के बीच भी जीने का तरीका आ गया
फ़रेब खाकर जिन्दगी अब हाथ है मलती नहीं।।

खूने –कत्लेआम से , अब जिन्दगी है लहुलुहान
नेक इन्सानों की यहाँ , दाल भी गलती नहीं।।

कैसे पछाडें , पटखनी दें , सोच का यूँ सिलसिला
सुकून दें गैर को , ये सोच ही पलती नहीं।।

मैकदे की रूह में , ' मै 'की किस्मत खुल गयी
बिना शराबे–जाम के ,कोई शाम ही ढलती नहीं।।

इश्क के सीने पर गहरे घाव हैं ऐसे लगे
प्यार के दामन में अब कोई कली खिलती नहीं।।

हिन्दोस्तां के चेहरे पर निशानात अब भी बाकी हैं
बंटवारे के दर्द के हालात , अब भी बाक़ी हैं।।

उजड गया था मुल्क जब काफ़िरों की साजिश से
दुश्मनी के , घाव के , ज़ज़्बात अब भी बाकी हैं।।

दोस्त से जुदा हुई दोस्तों की रूह जब
नफ़रतों के , शोलों के , सौग़ात अब भी बाकी हैं।।

कश्मीर की वादी बनी कई बार जंगे -- ज़मीन
लपकते हुए शोलों के अन्दाज़ अब भी बाकी हैं।।

हिन्दू -- मुसलमां रह गये , टूटे दिलों के संग
बेचैनियो के , ज़ख़्मों के, लम्हात अब भी बाकी हैं।।

ना बन सका हिन्दोस्तां पाक का रूहे -- सुकून
खौफ़ था पलता रहा , शुबहात अब भी बाक़ी हैं।।

अब यूँ तसव्वुर में मेरे , जज्बात से मत खेलिए
जो दर्द अब तक हैं दिए आप भी कुछ झेलिए।।

दिया था रंजोगम कि जैसे नेमते दी हों
क्यों गम तलाशा नहीं , आज तक अपने लिए ।।

आईने के सामने चेहरा है दाग़दार
भीतर छिपा है राज जो , आज खोलिए ।।

आपकी तबियत की हम फाक़ापरस्ती क्या कहें
कोई मिला जो राह में , संग आप हो लिए ।।

आपकी मेहरबानियों का सिलसिला यूँ है
गुलाब की जगह सदा बबूल बो लिए ।।

माना कि दर्द सहने की हैं आदतें मेरी
पर मेरे ज़ख़्मों को आप , यूँ न मोलिए ।।

ये ठीक है कि लगता है हर बाजी हाथ मे
गुमान इसका ले ,न जाने ,क्या-क्या हैं खो लिए।।

बंद आँखों से न ढूँढे रेत में पानी
छाए हुए कोहरे से हटके आँख खोलिए ।।

तुम हो न हो , पर हम तुम्हारे साथ हैं
तेरे लिए ही दिल के हर जज़्बात है।।

कैसा भी हो पल ज़िन्दगी की धूप का
मेरे ख़्याल आप ही के साथ हैं।।

लम्बे सफर में दर्द की पगडंडियाँ
मंजिल की ओर हर कदम हम साथ हैं।।

तूफान के साये में किस्मत डोलती
पर आप संग तो ठीक हर हालात हैं।।

फूलों की खुश्बू में भी दर्द का नशा
ऐसे भी कुछ प्यार के लम्हात हैं।।

खुशियों की महफिल साथ–साथ चल रही
तो संग में ही अश्क के जज्बात हैं।।

रोने को कोई ग़म नहीं तो भला क्या ज़िन्दगी
दु:खों की पैबन्द न हो तो भला क्या ज़िन्दगी।।

दर्द का अहसास न हो तो भला क्या ज़िन्दगी
ज़ख़्म कोई ख़ास न हो तो भला क्या ज़िन्दगी।।

मन में कोई फॉस नहो तो भला क्या ज़िन्दगी
आगे कोई आस न हो तो भला क्या ज़िन्दगी।।

अपनों का विश्वास न हो तो भला क्या ज़िन्दगी
हास व परिहास न हो , तो भला क्या ज़िन्दगी।।

मन कभी उदास न हो , तो भला क्या ज़िन्दगी
पर कोई उल्लास न हो तो भला क्या ज़िन्दगी।।

आरज़ुओं का भरोसा मत करो
अहसास को ऐसे परोसा मत करो
लोग हँस देंगे तुम्हारे जख़्म पर
नाज़ुक से ख्वाबों को कोसा मत करो।

***

मत कहो कि हम तुम्हारे पास अब भी
फिर बँधेगी शायद कोई आस अब भी
टूटकर बिखरा पड़ा है दिल मेरा
चल रही है लेकिन मेरी साँस अब भी।।

***

आज रोने को हुआ है मन किसी का
इसलिए है पास आयी शायरी
हुस्न के सजदे में बोलेगी नहीं
आज अश्कों में नहायी शायरी।।

जब बहुत करीब हो कोई
दिल के बीच हो कोई
अजनबी सा लगता है
दम निकलता लगता है।।

***

ये सच तेरी ज़रूरत है
जो आज तेरी सूरत है
उससे अजनबी हूँ मैं
उससे नहीं बंधी हूँ।।

***

तुम चाहे जितने अपने हो
मेरे ख्वाब , मेरे सपने हो
मौकापरस्त गर होगे
हर ज़ुर्म तेरे सर होंगे।।

आरज़ुओं का भरोसा मत करो
अहसास को ऐसे परोसा मत करो
लोग हँस देंगे तुम्हारे ज़ख़्म पर
नाज़ुक से ख्वाबों को कोसा मत करो।

***

मत कहो कि हम तुम्हारे पास अब भी
फिर बँधेगी शायद कोई आस अब भी
टूटकर बिखरा पड़ा है दिल मेरा
चल रही है लेकिन मेरी साँस अब भी।।

***

आज रोने को हुआ है मन किसी का
इसलिए है पास आयी शायरी
हुस्न के सजदे में बोलेगी नहीं
आज अश्कों में नहायी शायरी।।

जब बहुत करीब हो कोई
दिल के बीच हो कोई
अजनबी सा लगता है
दम निकलता लगता है।।

***

ये सच तेरी ज़रूरत है
जो आज तेरी सूरत है
उससे अजनबी हूँ मैं
उससे नहीं बंधी हूँ।।

***

तुम चाहे जितने अपने हो
मेरे ख्वाब , मेरे सपने हो
मौकापरस्त गर होगे
हर जुर्म तेरे सर होंगे।।

वतन की रूह में है अब भी प्यास खाली
बेजुबां बैठे हुए हैं हर सवाली।।

शाम का सूरज हुआ है शरमिंदा
जब सुबह ही खो गई आँखों की लाली।।

बागवां में उग रहे काँटों के पेड़
फूल मुरझाए हुए , उदास माली।।

पेड का साया घना होने लगा
लरजने लगी बाग की कमजोर डाली।।

अब खरे की बात भी , कोई करे ना
चल रहें हैं आज तो हर नोट जाली।।

रोशनी अब इस कदर खोने लगी
शाम को धुंधलका छाया , सुबह काली।।

औकात किसकी क्या है , पता नहीं है
अब लुटेरे भी समझते खुद को माली।।

नहीं कोशिशें की कभी बनने की पूरी
हम आधे – अधूरे ही सही हैं।।

दौलत की ढेर पर जो बैठे हैं सियासी
वतन की इज़्ज़त बेच खाते भी वहीं हैं।।

बेज़ुबां बन ज़ुल्म का हर वार सहते
वतन के गद्दारो में शामिल क्या नहीं है।।

हर ख्वाब अब खाने लगे हैं ज़ख़्म दिल पर
अश्क की किस्मत में बूंदें भी नहीं है।।

देश की ख़ातिर मिटे शहीद कितने
सैकड़ों यहाँ खून की नदियाँ बही हैं।।

सोने की चिड़िया लुट रही अपनों से ही अब
गरीब़ की किस्मत में साँसें भी नहीं हैं।।

न्याय की हर बात ही अन्याय लगती
अब खरे – खोटे का अन्तर ही नही है।।

मगरूर थीं मेरी साँसें
भरपूर थीं मेरी साँसें
चिन्गारी कोई जल गयी है
उम्मीद अब पिघल गयी है।।

***

लो कत्ल कर दो सर मेरा
बरबाद कर दो घर मेरा
कुछ सजाएं ऐसी होती हैं
जो बिन खता के मिलती हैं।।

***

मेरी शायरी में दर्द की
तासीर जो मचलती है
वो लम्हा –लम्हा रिसती है
रूह में पिघलती है।।

हुई अज़नबी नज़र कोई
वीरान है शहर कोई
तूफ़ान ऐसा गुजरा है
भटका है दर – बदर कोई।।

***

तुमने जन्म लिया था जहाँ
वो अज़नबी शहर है बना
नये लोग तुमको मिल गए हैं
ख्यालात ही बदल गए हैं।।

***

मुझको ग़ज़ल की रूह में
ग़म ढाल लेने दो
बिखरी हुई साँसों को
यूँ संभाल लेने दो।।

मेरी खामोशी मेरी हार का
कोई सिलसिला नहीं
एक जंग का ऐलान है
तेरी बदनीयती के दामन में।।

***

हार का डर मत दिखाओ , तुम हमें
'हार' मुझसे हारकर , बैठी हुई है
कई बार गुजरी छू के मेरे दिल को ये
आज मुझसे हारकर बैठी हुई है।।

***

आरजुओं के मकां जलने लगे हैं
गर्म रेत पर सभी चलने लगे हैं
तूफ़ान का वजूद है दिल में छिपा
आग में अब ख्वाब हर पलने लगे हैं।।

***

हाले-दिल मैं क्या सुनाऊँ सुन जमाना
दर्द का अब भी वही , किस्सा पुराना
लाख सहलाऊँ तगी , हर चोट को
जख्म फिर से छेड़ता ये दिल दीवाना।।

रोटी की खातिर ,मुल्क से रुख़सत हुए
ईमान अपना बेच बेग़ैरत हुए
कल माँ को भी बाज़ार में , नंगा करोगे
सीने पर धरकर पाँव जब सौदा करोगे।।

***

पाँव में मेंहदी लगी , कैसे चलूँ
वक्त ने की दिल्लगी , कैसे चलूँ
दहलीज ऊँची हो गयी है , रूह की
चौखट के बाहर पाँव रख कैसे चलूँ।।

***

हर ओर फागुनी सुगन्ध , मन है बहकने लगा
पी के ख़ुशी की कोई भंग मन है बहकने लगा
खुशियों की बारिश में नहाया मन का मेरे पोर-पोर
गुलाल की मस्ती सजाके मन है बहकने लगा।।

मत कहो हर बात को , यूँ रूबरू खुलके
कुछ अनकही बातों को तुम ,हालात पर ही छोड़ दो।।

टूटकर बिखरे नहीं शीशा–ए–दिल की रूह
ज़ख्म के अहसास को , मुस्कान के संग जोड़ दो।।

चलता रहे दिल में भले ही , दर्द का कोई काफ़िला
ग़ज़ल के चौराहे पर ला , उसे खूबसूरत मोड़ दो।।

दिल के शाख की कली , लुटे नहीं जज़्बात से
जख्म बनने से ही पहले , दर्द को निचोड़ दो।।

अश्क के सैलाब में डूबे भले ही दिल
बेवफा रिश्तो की डोर , दिल से अपने तोड़ दो ।।

कटी पतंग की तरह न लड़खड़ाए जिन्दगी
कमजोर जज्बातों को तुम , सख़्त बन झिंझोड़ दो।।

कौन अपना , कौन पराया है
मैंने सभी को आजमाया है।।

मुकद्दर खड़ा है मुँह मोड़े
तो अजनबी सा अपना साया है।।

हालात की बात यूँ छिड़ी है तो
मैंने काँटों मे घर बनाया है।।

वो कह रहे ग़म को गुरूर है ये
ज़ख़्मों को मेरे इस तरह सताया है।।

हम खोलकर दिल ,सच दिखाएं किस तरह
झूठी कहा , मुझको बड़ा रुलाया है।।

रुकी रही करीब उनके आने को
अज़नबी कह दूर ही बिठाया है।।

ज़र्रा – ज़र्रा बिखरती रही हूँ मैं
बर्दाश्त की हद तक मुझे रुलाया है।।

जब मोम बनके सख़्त बन गयी आरजू
तीली जला , फिर से उसे गलाया है।।

मादरे हिन्द की क़िस्मत बदल गयी है
नफरतों की आग हर सीने में जल गयी है।।

कैसे रहेंगे मिलजुल के वतन के तरफ़दार
एक की खुशी ही अब दूजे को खल गयी है।।

रोशनी है हर तरफ पर रास्ते हैं गुमशुदा
मंजिलें हैं रूबरू नीयत बदल गयी है।।

जिन्दगी की धूप में स्याह ज़ख़्मो के निशान
सूरज की तीखी रोशनी में शाम ढल गयी है।।

इन्सानियत बे–आबरू, सच है गुमराह अब
दीन की, ईमान की, क़िस्मत ही जल गयी है।।

अमनो–चैन की, ख़्वाहिश, जनम लेती नहीं
बिन मरे ही रूह की, साँसें निकल गयी हैं।।

चाहतें आधी – अधूरी अब तलक
मन में मेरे रोशनी है अब तलक।।

ज़िन्दगी ये , रेत में जल की तलाश
प्यासा हुआ हर आदमी है अब तलक।।

मन के आकाश में है मेघ – घन
फिर भी फैली चाँदनी है अब तलक।।

रात अमावस के जैसी काली है
मन में छिटकी रोशनी है ,अब तलक।।

जीतने को हैं बने ही खेल कितने
फिर भी हारा आदमी है , अब तलक।।

हार में आभास जब हो जीत का
तब ही जीना लाज़िमी है ,अब तलक।।

इजाजत हो आपकी , तो लिखूँ कुछ
इनायत हो आयकी तो कहूँ कुछ
बिन आपके लिखना मुमकिन नहीं
जरूरत हो आपको तो लिखूँ कुछ ।।

***

जज्बात ठंढे हो गए तो क्या करोगे ?
अहसास गुम तो हाथ ही मलते रहोगे
कीमत है इनकी साँस का चलता खजाना
रखना इन्हे बचाके ऐसे मत लुटाना ।।

***

बोझल सा एक खुलूस जेहन में उतर आया
रंजो–गम से दूर था , जिसका घना साया
एक ख्याल परेशान था ,अहसास थे बंजर पडे
जिसको लिए दिल में तन्हा से जैसे हम खडे।।

हम क्या करें , कैसे जियें , क्यों फैसला तेरा
पाबन्दियाँ इतनी हमें , खुदा भी देता नहीं।।

गर बॉस हो , तो बॉस बन कुर्सी ही सँभालो
घर का अमनो–चैन कोई , इस तरह लेता नहीं।।

क्यों यहाँ , अपने कद पर ,कर रहे हो तुम गुमां
छोटों की गर्दन काट कर , कोई साँस यूँ लेता नहीं।।

उनको सँवारों , मत बिगाड़ो , बनी हुई किस्मत
कोई खुदा भी इस तरह तो जख़्म है , देता नही।।

जो गम हमारे हैं , सहेंगे , तुम उन्हें क्यों दो
मुर्गी के अंडे को कभी , हाथी तो है सेता नही।।

अभिमान की जिस कश्ती में , तुम बैठ बह रहे
उसे कोई भगवान तो आके है खेता नही।।

कश्ती उलट गयी बीच में , मिट जायेगा नामों–निशां
चेतो अभी चेतो, न कहना फिर , हमें चेता नहीं।।

खामोश जुबानों पर लगे तालें है
ख़ौफ़ मे डूबा , शहर क़िस्सा कैसा।।

धूप गुमसुम सी उदास बैठी है
खुशियों में ग़म का हिस्सा कैसा।।

कत्ल कुछ लोग हुए चौराहे पर
ये माजरा कैसा , ये हादसा कैसा।।

उनकी ख़ता थी , हक के लिए लडे वो
अब साँस ही नहीं , हक़ का फैसला कैसा।।

कोई छीने साँसों को ,कोई भूख के लिए मरता
रोये यूँ इन्सानियत , सच का हौसला कैसा।।

अब जानवर की बस्ती मे , इन्सान एक बसता है
घावों से भरता दामन है ,हर दुख है ,हरा कैसा।।

दुनियाँ की तंग गलियों में कसाइयों के डेरे हैं
हैवानियत की चालें हैं खोटा ही सब , खरा कैसा।।

अपनी ख़्वाहिश के वास्ते जज़्बात यूँ फिसल गया
गैरों की ख़ातिर जीने का अन्दाज आजकल गया।।

कितनी खुशी समेटोगे , दामन मे तुम तन्हा खडे,
वो क़ैद होकर जी रही , लम्हात उसको खल गया।।

रफ्ता–रफ्ता हार जाओगे, , अकेले सफर में
दिल का सुकूं बेचैन हो ,देखो तो मुसलसल गया।।

गुलाम क्या बनाओगे , गुलाब की खुश्बू को तुम
आज़ाद बन उड़ती फिरे , शबाब उसका चल गया।।

लौटा करेगी घर को तेरे , उदास सी हर आरजू
वक़्त के आईने में गर , वक्त फिर से ढल गया।।

किसको कहोगे हमसफर , किसको कहोगे तुम खुदा
लम्हों के साथ ही अगर , चेहरा कोई बदल गया।।

खुदग़र्ज़ी का आलम घिरा , सब खो गये ग़ुबार मे
बैचैन कोई और भी , जज़्बात ही फिसल गया।।

अपना ही ग़म अपनी , खुशी , वायदों की बस फिकर
कुछ लोग गम में जल रहे, अहसास ही है जल गया।।

जिन्दगी ! कैसी अजीब हालत है
बाहर खुशी , भीतर बेचैन तबियत है ।।

अपने सुकून को , बचाने के लिए
गैरों पर जुल्म ढाने की फितरत है।।

दौलत की छाँव मे , मुहब्बत के मकां
ज़माने की आज दास्ताने उल्फत है ।।

अपने ही अजनबी नज़र से देखते
जिन्दगी है या कि कोई ज़िल्लत है ।।

प्यार का चराग , दिल में बुझ गया
इन्सान को इन्सान से अब नफरत है।।

हक की लड़ाई में , जरा आगे बढ़े तो
वो कहें इतनी तुम्हारी जुर्रत है।।

नकली दिखावे की भडकती आग में
फीकी पडी इन्सानियत की दौलत है।।

मारी है पिचकारी अबकी राधिके की ओर
कान्हा तू बड़ा चितचोर
मुख पे लगा गुलाल रंग दिया ओढ़नी का कोर
कान्हा तू बड़ा चितचोर ।।

***

रौनके – उदासी का आलम भी अच्छा है
तस्वीर में कोई रंग भरने की ,ख्वाहिश नहीं है अब
बिखरते हुए लम्हों की रंगीनियों का चेहरा
लम्हा – लम्हा स्याह पडता जा रहा है।।

***

आरज़ुओं का शरीर मन देखो
मस्ती भरा आलम , सजा जीवन देखो
साथ में देखो बहारों की उदासी
क्यूँ सर्द होती यूँ हवा , बहकर जरा सी।।

आग उनकी लगाई हुई है
बात यहाँ तक आयी हुई है
वो समझ रहें हैं जिसको ख़ता
वो जमाने की सताई हुई है।।

***

मेरी शायरी में दर्द की
तासीर जो मचलती है
वो लम्हा – लम्हा रिसती है
रूह में पिघलती है।।

***

ऐ मेरे नादान दिल रोया न कर
जो ज़ख़्म दिल पर हैं लगे धोया न कर
ये दर्द ही मेरी ज़िन्दगी है , साँस है
ये दर्द मेरे रूह की आवाज है।।

आँखें दिखा , उनको डराना आ गया है
अब क्या ज़माना , आ गया है ।।

बॉस की कुर्सी मिली , भगवान हो गये वो
दूसरों के जख़्म पर ,ठोकर लगाना आ गया है।।

बनें हैं खुदा जब , किस्मत भी सँवारे
धमकियों की ढाल ले केवल डराना आ गया है।।

जी हुजूरी कर रहें सब , खौफ आँखों में लिए
खौफ देख नजर में , उनको सताना आ गया है।।

जुर्रत कहाँ की खींच लें साँसें भी इक सुकून की
किस्मत को दोषी मान ,आँसू बहाना आ गया है।।

गर कहीं गल्ती हुई तो रोटी ही छिन जायेगी
जिन्दा मुर्दों को , उन्हें ,दफनाना आ गया है।।

पल–पल के खौफ से , तो मौत ही बेहतर
ये सोच लोगों को ,खुद को जगाना आ गया है।।

ज़िन्दगी अपनी हो और फैसले खुद के
हिम्मते तलवार ले ,उनको झुकाना आ गया है।।

दास्तान – ए – दिल औरत का
मत पूछ बार – बार
होठो पे हँसी , नजरो में
रात की सियाही है ।।

***

इन शोख नज़रों का मिजाज ,जरा सा झुका हुआ
महसूस कर जिस आँच को दिल है कुछ रुका हुआ
होली के कोई रंग में , ज्यों भंग का नशा मिले
यूँ हमसफर की चाह का अन्दाज़ कुछ बहका हुआ।।

***

हर रात कोई दर्द ले तड़पा रही किसी जख़्म को
सुबह अश्के – शबनम में , नहा के धुल गयी
फिर घाव क्यों भरता नहीं जो दिल की साँसों में ढला
क्यों टीस की चादर लिए पिघला रहा मेरी नज्म को ।।

***

***

यादों पे कफ़न डाल के रक्खा है
मैंने खुद को सँभाल के रक्खा है
अश्क पिघल जाए ना ,देख रूबरू तुझको
मैंने ज़ख्मों को खंगाल के रक्खा है।।

***

मेरा टूटकर बिखरना जरूरी था
तिल – तिलकर मेरा मरना ज़रूरी था
दम घुटने लगे मेरा ज़ख्म के आगोश में
ऐसे अहसासों का दिल से गुजरना जरूरी था।।

***

खाली गिलास हैं रिश्ते
अधूरी प्यास हैं रिश्ते
कई बार भरना चाहा है
हर बार मरना चाहा है।।

शख्सियत तेरी बला सी
छाँट देती , हर उदासी ।।

थक के जब पाँव , बेदम हो गये
चाँद को देखा था तुममें पूरनमासी।।

रिवाजों की जंजीर में जकड़े जरा तो
करके दहलीज पार , हो गए तुम सियासी।।

हार की गुंजाइश नहीं कैदी वजूद में
तो भला क्या रोकती, पाँव की जकड़न जरा सी।।

तकलीफों का कारवाँ करता रहा वार तुझ पर
दिल के जोश से , भाग जाती हर उदासी।।

तकदीर ने काई बिछा , रोकना चाहा तुझे
तुमने उसे पुख़्ता बना ,राहें बनायी बागवां सी।।

रोते रहे जो लोग गम की जरा सी तासीर में
तेरी छुअन से दूर हो गए ,उनके हर ख्वाब बासी।।

याद तेरी जब भी सबके दिल में आके डोलती
दिल के कूचे में है बहती ,खुशनुमा कोई हवा सी।।

त , बेवज़ह ही , अकड़े हुए हैं लोग
र की जंजीर में जकड़े हुए हैं लोग।।

बात कोमल मर गये ,कोई सोच भी पुख़्ता नहीं
की लगाम को , पकड़े हुए हैं लोग।।

र उठाने का तरीका इस तरह कुछ है
ं की गर्दन काटकर अकड़े हुए हैं लोग।।

ाहिशों की नींव में , भ्रष्टाचार की ईटें जुड़ीं
ने कदों के बीच भी सिकुड़े हुए हैं लोग।।

सूरत मन के ऊपर कास्मेटिक सर्जरी
ं के अभिमान में , जकड़े हुए हैं लोग।।

रहें यूँ जाल , गैरों को फँसाने के लिए
ार पर चिपके हुए मकड़े हुए हैं लोग।।

जगी भरी रौनक बेईमानी के संग मर गयी
ा फटे–पुराने से चिथड़े हुए हैं लोग।।

ये कैसी तबियत है , ये कैसी ख़्वाहिश है
हर ओर अँधेरा है , फिर भी गुंज़ाइश है।।

मैंने हर ज़ख़्मों को , दिल में यूँ सम्हाला है
जैसे इस घर में ही , उनकी पैदाईश है।।

जब भी थका है मन , दर्द ने साँसें लीं
गम के समन्दर में , उम्मीद की बारिश है।।

मैं हूँ ही कहाँ तन्हा , हलचल सी है साँसों में
दर्द ने की सरगोशी , हर जख़्म की काविश है?।।

कुछ लोग बढ़े आगे सच को कत्ल करने
लपटों से घिरा ये घर , ये किनकी साज़िश है।

इस जहाँ की फ़ितरत से , जख्मी हुआ है दिल
हर सोच बिखर जाती , बेचैन सी कोशिश है।।

लहू के रंग में, शराफत अब भी है
गले मिलने की आदत अब भी है।।

लाख रास्ते में पत्थर हों
पैरो की हिफाज़त अब भी है।।

माहौल की बेचारगी से सहमें हैं
दिलो में बग़ावत अब भी है।।

भूख से गुमसुम पड़ी गठरियों के
जिस्म में हरारत अब भी है।।

बाज़ार बन गया, भले ही मंजर हो
दिलों में मुहब्बत अब भी है।।

वतन के गद्दारों की, साज़िश चल रही
दिलो में शहादत, अब भी है।।

हाशिया छोड लिख रहा होगा
वो ऐसे ही जी रहा होगा।।

गैरों के ऑसू पोछने की ख़्वाहिश में
खुद के अश्कों को पी रहा होगा।।

कलम की ताकत पे लगी बंदिश है
खून के ऑसू रो रहा होगा ।।

रोटियॉ बॉट अपनी गैरों में
खाली पेट सो रहा होगा।।

छत की छप्पर से टपकती बूँदें
दिल के जख़्म धो रहा होगा।।

नफरत के धुएँ से घुटता रहा दम
मुहब्बत के बीज बो रहा होगा।।

वतन की पतझर सी उदास ऑखें
उनमें सपने सँजो रहा होगा।।

महरूम जो हैं लोग अपनी क़िस्मत से
उनकी ख़तिर वो लड़ रहा होगा।।

तेरी नज़र में बग़ावत शायद हो
उनकी नज़र में वो खुदा होगा।।

मत कहो बेबाक रखना ज़ख़्म सीके
ऊँचे दुकानों में बने पकवान फीके।।

ऊपरी दिखावा, स्नेह की बातें हैं सारी
भीतर विष के घाव हैं, ज़ख़्मो के टीके।।

एहसान उनका इस तरह मत ओढ़िए
रहना पड़ेगा आपको चुप, अश्क पीके।।

मतलबपरस्त नस्ल की पैदाइशें हैं
भगवान के आगे रखें चराग घी के।।

मतलब पड़ेगा, हाथ थामेंगे तुम्हारा
मत लगाना पास जाके ज़ख़्म जी के।।

बोली लगे हर चीज की बाज़ार मे
घाव गहरे दिल में आज आशिकी के।।

सफर में ऐसा भी मक़ाम आया है
बिछुड़े हुओं का, मुझको सलाम आया है।।

जिनकी सलामती की इबादतें की हैं
उनका भी मुझे इन्तक़ाम आया है।।

भीतर तक मैल की परते बिछी हैं
पर नहाने के लिए उनके ,हमाम आया है।।

जो बेलगाम, बेझिझक हैं रौंदते सबको
उनके ही हाथों में जनता का लगाम आया है।।

जो आज तक बनाते रहे सबकी हजामतें
उनकी हजामत के लिए बाहर हजाम आया है।।

जो रातभर भूख से, सो नहीं पाते
उनके लिए अब क्यों पिस्ता बदाम आया है।।

जिनको नहीं है जानता, कोई इस शहर में
दर्जनों ख़त आज उनके नाम आया है।।

अपमान थे करते रहे जिस शख़्स की अब तक
वो ही बन्दा आज, उनके काम आया है।।

झुकी हुईं हैं नज़रें जो
शर्मे – बयानी के लिए
गुनाह वो तो तेरा ही
मेरी आबरू से लिपटा है।।

***

हर ख़ता की गुनाहगार मैं
जो तेरे दिल में पलती है
तेरे गुनाहों की मंजिल
साथ मेरे चलती है ।।

***

बासी फूलों से फ़िजा महकी है
ये बहार कोई कम तो नहीं
क्या करेंगी चटखती कलियाँ
मिटने का जिन्हें अंदेशा हो।।

किस्मत का ले लिया ठेका
काँटों में मुझको यूँ फेंका
कि फूल बनके खिलने की
ख़्वाहिशें गुजर गयी है।।

***

कोई नहीं है साँसों में
साँसों में फिर खलल क्यों है
क्यो उदास होता मन
जब कोई ग़म नही होता।।

***

ख़ामोश इक समन्दर है
वीरान सी इन आँखों में
तूफान की लहर भी हो
ये जुस्तजू नहीं बाकी।।

तुमने बता दिया हमको
मेरी हैसियत क्या है
मुझको जगाने के लिए
इतना ज़रूरी भी था।।

***

मुँह फेरकर यूँ चल देना
हर बात यूँ बदल देना
तकलीफ देता है हमको
रिश्तों का ऐसे छल देना।।

***

हालात ही बदल गए हैं
कुछ लोग मुझसे जल गए हैं
साँसें निकाल दी मेरी
कुछ रिश्ते मुझको छल गए हैं।।

जूते पुराने हो गए हैं
बच्चे सयाने हो गए हैं।।

हो गयी चीज हर बेकार सी
नयी चीज के अब ,वो दीवाने हो गए हैं।।

कुछ अलग दिखते हैं , वो सोच उनकी
सच मरा , झूठे बहाने हो गए हैं।।

रूह के अन्दर बसी है प्यास खाली
आज सब अपने बेगाने हो गए हैं।।

प्यार की दौलत से दिल है अजनबी
खाली सब उसके खजाने हो गए हैं।।

इश्क की तबियत जरा नासाज है अब
झूठे सब उसके फँसाने हो गए हैं।।

बर्छियां चलने लगीं रिश्तों के बीच
खंजरों के सौ बहाने हो गए हैं।।

बिक गये हैं खेत व खलिहान सारे
दे दिए हैं मैने इम्तहान सारे।।

हाथ खाली, पेट खाली, ज़िन्दगी भी
मिल गए हैं धूल में, अरमान सारे।।

जो मुझे अपना लगा करते कभी थे
बन गए हैं वो तो मेहमान सारे।।

तीर अब तो मेरे तरकश में नहीं है
चूक गए हैं आज मेरे बान सारे।।

दूर से ही देखकर मुँह फेर लेते
बन गए हैं गैर व अन्जान सारे।।

हाथ खाली हों तो रिश्ते अजनबी है
खोल लेते हैं यहाँ दुकान सारे।।

जब पलस्तर ही उतर गयी, दीवार की
बन गए हैं तौलिए, पायदान सारे।।

दोस्तों की भीड़ में तन्हा खड़ी हूँ
हो गए हैं आज वो महान सारे।।

कत्ल करके मेरा तुम
उन कातिलों से मिल गए हो
जिनकी पनाह में घुटती
मेरी जिन्दा साँसे हैं।।

***

मजबूरियाँ रही होंगी
कुछ दूरियाँ रही होंगी
अब तो फासले बढ़ गए
जब सीढियों पे तुम चढ़ गए।।

***

उसने चुरा के रोटी को
काफ़िर बना दिया खुद को
भूख से बडी कोई
जरूरतें नहीं होती।।

घंटों लिए बैठा रहा , कलम को हाथ में
थीं उलझने ज्यादा ,किसे लिखे ये सोचकर।।

मुस्कराने की कभी फुर्सत नहीं मिली
मुस्करा पडा था वो , ये बात सोचकर।।

थीं स्याह रातें अनगिनत ,बिन्दास से थे दिन
ज़ख़्म चल देता था , उसका दिल खरोंचकर।।

चूल्हा कभी जला , कभी ठंढा रहा पड़ा
बच्चे रहे भूखे भी , अपना मन मसोसकर।।

दिन-रात की मेहनत ,मशक़्क़त हो गयी बेकार
भूख दस्तक देती रही, घर उसका खोजकर।।

बीमार कल था वो ,सब खाली पेट सो गए
चल पड़ा था काम पर , अश्कों को पोछकर।।

रुलाता रहा उनको , बहारों का मौसम
उदास सा था दिल , मुरादों का मौसम।।

थी अनकही बातों की लम्बी फेहरिश्तें·
गमगीन था , ख़ामोश साजों का मौसम।।

ये ठीक भी था कि न रहता वो दिल के पास ·
पलता रहा फिर भी , अहसासों का मौसम।।

करीब रहने को ही हुई थीं , दूरियाँ ईजाद
पिघलता रहा था दर्द ,जज़्बातों का मौसम ।।

ख़मोश अँधियारा पला था , रूह के भीतर·
जुगनू सी थी यादें , चरागों का मौसम।।

जल चुका है रावण तो , फिर राम कहाँ है
दे जो मुकम्मिल रोशनी , वो शाम कहाँ है।।

ग़ैरो को खुशी देने की , चाहतें गुजर गयी हैं
सच के लिए लड़ने का , ईमान कहाँ है।।

देखा है रोज , हाशिए पर चलते लोगों को
भीड़ में जो खोये हैं , पहचान कहाँ है।।

एक चिन्गारी बनके दीपक ,जलने लगे दरवाजे पे
जज़्बा हो , यूँ मिटने का अरमान कहाँ है।।

खुद के लिए जीना , खुद के लिए मरना
ग़ैरों को हँसी दे अपनी ,इन्सान कहाँ है।।

नफ़रत को मुहब्बत दे , ग़म को सुकून–ए–आलम
बिखरे को संवारे जो , भगवान कहाँ है।।

आँखों की कंदीले , जलाने को दीवाली आयी है
बेजार ग़म के अश्क छिपाने को दीवाली आयी है।।

जलता रहा ग़म , रोशनी बुझी थी , नजरों की
बीमार अहसासों को जगाने को दीवाली आयी है।।

कुछ ज़ख़्मी अहसासों को , नंगे बदन से लपेटे
नये कपडो के ख़्वाब दिखाने को दीवाली आयी है।।

जलती रही रात भर , भूख की भट्टी भीतर में
ख़्वाब रोटी का लिए ,रुलाने को दीवाली आयी है।।

अहसास में बस सपने हैं पर रूबरू खाली दुनिया
किन इन्सानों के भाग जगाने को दीवाली आयी है।।

बचपन के सतरंगी सपने कराहते हैं ,जिन आँखों में
क्या उनके दिलों में आग लगाने को दीवाली आयी है।।

खाली निगाह ,कसक एक दिल में है
आज भी क्यों वह इसी महफिल में है।।

हो गए अरसा जिसे देखे हुए
क्यों बसा अब तलक , वह दिल में है।।

समय की परतों में , ढक गया वजूद
जो जहाँ था , वो वहीं पर , दिल में है।।

खामोशियों की गुफ्तगू , मीठी चुभन
वीरानियों की बेबसी , मंज़िल में है।।

कोई खौफ या मजबूरियाँ शामिल नही
एक अजब मासूमियत क़ातिल में है।।

बीच भंवर में किनारे की तलाश
कैसा अनोखा हौसला साहिल में है।।

हालात हैं दिल के मेरे , बीमार क्या करूँ
कुछ ज़ख्म दिल पर हैं लगे , ऐ यार क्या करूँ।।

कुछ लम्हे पकते हैं , जज़्बातों के आँगन में
कोई धीमी आग सुलगती है , हर बार क्या करूँ।।

अपने लहू के रिश्तों ने , अजनबी बनाया है
कोई देता नहीं है प्यार , क्या करूँ।।

कुछ रातें क़ातिल बनके जख़्मी करती हैं दिल को
अजनबी सा दिखता है , संसार , क्या करूँ।।

जिन साँसों में रची–बसी मेरे बचपन की यादें हैं
वो ही हैं मुझसे बेजार क्या करूँ ।।

खो गयी है मंज़िल वो चलने की जिस पे ख्वाहिश थी
हर रिश्ते हैं व्यापार क्या करूँ।।

मेरी पैदाइश ही बेवफ़ा गली की बाशिन्दा
सिर पर लटकती रहती है , तलवार क्या करूँ ।।

मुझे गम नहीं किसी बात का कहता रहा था वो
पर दिल के टूटे आईने में , अक्स था उदास ।।

तमाम खुशियाँ बेखबर सी , दूर थीं पड़ीं
गमों की बोझल भीड़ में वो शख़्स था उदास ।।

कोई ख़त नहीं आया कभी भी ,उसके नाम का
कोई रूह में बसा नहीं , हर वक़्त था उदास ।।

जब गुफ्तगूं खामोश सी , कुछ तेज थी हुई
आँधी चली ऐसी कि हर दरख़्त था उदास ।।

जज़्बात को किसी पाल ले , ये आरज़ू भी थी
पर दिल जो टूटा बेवजह ,वह सख़्त था उदास।।

बेचैनियों का हाथ थाम , तन्हा चल पड़ा
हँसता ही जा रहा है जो , वो शख़्स था उदास।।

अश्कों के ज़ज्बात की बात क्या कहिए
दिल के हालात की बात , क्या कहिए।।

भीतर इक समन्दर बिखर के फैला है
घावों के निशानात की , बात क्या कहिए।।

सिसकियाँ डूबती रहीं हैं अश्कों के ग़म में
लम्हों के एहसासात की बात क्या कहिए।।

उनके बिछुड़ने का ग़म , दफ़न है सीने में
उनके ख्यालात की बात , क्या कहिए।।

कोई अन्जान ख़ता की तस्वीर उनकी आँखों में
हमसे सवालात की बात , क्या कहिए ।।

जब भिंगोने लगे दर्द खुद ही ज़ख़्मों को
ऐसे जज़्बात की बात , क्या कहिए ।।

इक समन्दर पास मेरे रहता है
मन न जाने क्यों उदास रहता है।।

हर बार कोशिशें हुई नाकाम मेरी
वक्त बदलेगा विश्वास रहता है।।

मेरे ग़म को समझना भी नहीं आसान इतना
मरते हुए जीने का भास रहता है।।

वो कुचल के मेरे ज़ख्म , फिर से चल दिए
ये सोच मेरा मन , हताश रहता है।।

तनहाइयों की भीड़ में , खोई हुई हूँ
वीरानियों में कोई पास रहता है।।

मरने के लिए ख़ाली से हैं कहकहे
जीने के लिए ज़ख़्म खास रहता है।।

ताबूत में पैसे के बन्द हो गए सब
तंगियों में भी उजास रहता है।।

दीन व ईमान की , नीयत बदल गई
ये सोच मेरे मन में फाँस रहता है।।

नाकामियों की चोट से उखड़ा हुआ है
कोई टूटकर फिर से यहाँ बिखरा हुआ है।।

अपनी शिकस्त पे हुआ है शरमिंदा
बसने का लेके ख्वाब वो उजड़ा हुआ है।।

रोटी की खातिर घर से बेघर हो गया वो
हर ज़ख्म लेकर आज वो निखरा हुआ है।।

दो जून की तंगी सताने है लगी
तकदीर से अपनी ही वो ,बिगडा हुआ है।।

चूल्हा हुआ ठंढा , तरस के दानों को
साहूकार से कल , उसका , झगड़ा हुआ है।।

ईमान ने कत्ल कर दीं ख्वाहिशें
बसता हुआ घर आज , उजड़ा हुआ है।।

उसने चुराके रोटी को ,काफिर बना दिया खुद को
भूख से बडी कोई , जरूरतें नहीं होती।।

परवरदिगार बन बैठे पैसे के आज मंसूबे
इन्सान नेक बनने की , चाहते नहीं होती।।

गैरों को दर्द देकर के , सुकून से वो बैठे हैं
ज़ख़्म दिल का देखें ,ये आदतें नहीं होती।।

झोपड़ी की आग से जल गयी ,दुनिया उसकी
दर्द बाँट लेने की , चाहतें नहीं होती।।

चीथड़ों से झाँकता अधखुला बदन उसका
शर्म ढाकने से , बड़ी , इबादतें नहीं होती।।

खुशियों के एक गम तन्हा खड़ा था
कद से छोटा लग रहा था ,पर बड़ा था।।

उस एक गम को , पालने की आरजू थी
वह जिद किए बैठा था , मेरे से अड़ा था।।

मायूस थी मैं सोच , गर वह छोड़ दे तो
अहसास उसका दिल के शीशे में जड़ा था।।

कहकहों के बीच कीमत क्या थी उसकी
जो आज तक बस, दर्द लेकर ही पड़ा था।।

उसने ही मेरे घाव पर मरहम लगाया
उसने ही काटा ज़ख़्म,जो दिल का सडा था।।

खुशियों का फीका रंग कल उड़ जायेगा
वो तो मेरी रूह , साँसों में पड़ा था।।

सच है यारों खुशियाँ ठहरें दो घडी
पर साथ हरदम दे जो ,वो ही बड़ा था।।

जब भी कोई तन्हा ग़म
अश्क बनके ढलता है
हर मंजर उदास लगता है
दर्द कोई जलता है।।

***

क्यूँ परदा गिराके रक्खा है
कुछ राज़ खुलके आने दो
तकलीफे – बयानी का हक
तुमको भी है दुनिया में।।

***

जान से प्यारा है , मुझको ये वतन
हवा यहाँ की बह रही है , खून बन
मज़हब का बीच में में जो पर्दा पड़ गया
जज़्बात के दामन में काँटा गड गया।।

परेशान से , तनहा खड़े थे हम
हक के लिए जब भी लड़े थे हम।।

आवाज़ मेरी दूर से आती रही
नज़दीक सच के जब अड़े थे हम।।

महफिलें थीं , रोशनी थी , ज़िन्दगी थी
पर था अँधेरा जब खरे थे हम।।

कुछ लोग थे नकाब में छिपे हुए
ईमान की खातिर डरे थे हम।।

हथियार से जब लैस भ्रष्टाचार था
फरेब था अकड़ा तड़े थे हम।।

दे दी मुहब्बत खोलकर मैंने सभी को
पर घाव दिल का , ले हरे थे हम।।

उनके ज़ख्मों पर मरहम जब भी लगाया
जहर उनका ले मरे थे हम।।

दूसरों की आग में ,कभी जल के देख
पत्थर है तू , तो पिघल के देख।।

कितना सुकून मिलता है गैरों को उठाने मे
गिरते हुए कभी सँभल के देख।।

ज़िद करने की आदतें भी अच्छी हैं
बच्चों की तरह कभी मचल के देख।।

अंगूर खट्टे नहीं , मीठे भी हैं
तू ऊपर तलक उछल के देख।।

भूख किस तरह सताती है उनको
कभी खुद उसमें उबल के देख।।

दर्द कितना होता है ज़ख़्म देने में
खुद उस आग में जल के देख।।

इश्क के रिश्ते बेवफ़ा नहीं होते
कभी दूर तक संग चल के देख।।

रोशनी का साथ सदा अँधेरा देता है
सूरज की तरह कभी ढल के देख।।

मत करो इन्सान पर विश्वास इतना
हर अँधेरा ही जगे प्रकाश इतना।।

सच की सूरत में खड़ा है ज़ख़्मी जीवन
न्याय की बातें लगें, परिहास इतना।।

देश के, बलिदानों के पन्ने खोलने को
अब कहाँ, किसी को है अवकाश इतना।।

लूटकर सोने की चिड़िया चल दिए वो
बंजर धरती, वीरान है अहसास इतना।।

माँ की सूरत पर लकीरें ज़ख़्म की हैं
फिर भी बेटे कर रहे बकवास इतना।।

स्वार्थ की दुनिया में रिश्ते घुट रहें हैं
दर्द मिलता, दिल को है अब ख़ास इतना।।

अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मारते सब
घर रहे गधे भी हैं अब घास इतना।।

माहौल की दरिन्दगी बढ़ने लगी है
घर में बैठे झेलते बनवास इतना।।

जमात है रंगे सियारो की
अवाम का भटकना वाजिब है।।

दर्द से भरी लकीरो में
जख़्मों का सिसकना वाजिब है।।

जनता की जंग में शरीक बहुरुपिये
ख़्वाबों का लरजना वाजिब है।।

जनवाद की जादुई छड़ी को छू
लोगों का बहकना वाजिब है।।

क्रान्ति के नाम पर चिल्ला रहे सियारों से
सुर्ख लावे का दहकना वाजिब है।।

तेज रोशनी है चुभती आँखों को
पलको का झपकना वाजिब है।।

बादशाह नंगे पाँव जब चलेगा तो
अवाम का झिझकना वाजिब है।।

एक दिन रुबरू , मंज़र होगा
बिखरा हुआ शहर होगा।।

वो नहीं बदला ,लाख कोशिशें की है
वो ज़रूर जानवर होगा ।।

तकलीफे ग़म देता रहा , गैरों को
खुदा का तनिक न डर होगा।।

वो नहीं भींजता ,अश्कों की बारिश से
अहसास से पत्थर होगा।।

जनवाद का नक़ाब वो , पहने हुए
लूटता लोगों को ,हर पहर होगा।।

बिच्छू ने नहीं काटा है तुझको
वो उसका ही ज़हर होगा।।

जो कह रहे , सच वही क्या है
उलझन में हूँ , सही क्या है।।

फ़रेबी लिबास में , तुझको देखा है
तेरे भीतर का सच यही क्या है।।

तुम जो हो , नहीं दिखते लोगों को
यकीन की दीवार ,अब ढही क्या है।।

तुम बात करते ,मुफलिसी की ,फाकों की
फरेब लोगों से , नहीं क्या है।।

तुम अवाम के , हक में लिखा करते
चेहरे पे नकाब , ये ,नही क्या है।।

मत बनो काफ़िर , खुदा के लिबास मे यूँ
गद्दार की जात , ये नहीं क्या है।।

हम अँधेरे को समझ के रोशनी
खुश हुआ करते हैं अपनी किस्मत पे।।

घिर गये हैं आज हम , हालात के गुबार में
तरस भी खाते नहीं , अपनी ऐसी हालत पे।।

रूह से लिपटे हैं स्याह ज़ख्मों के निशान
आँसू बहा रहें हैं , आज अपनी मैय्यत पे।।

झूठ क्या ,सच है क्या , क्या गलत , क्या सही
अब शरम आती नहीं, कोई बुरी सी आदत पे।।

इश्क की दुनिया उजड़ गयी ,प्यार का सौदा हुआ
पैसों की पैबन्द लग गयी ,आज दिल की चाहत पे।।

कसम उन्होंने ली थी जब , जहाँ बदलने की
अचरज भरा था लोगो में ,उनकी ऐसी जुर्रत पे।।

मादरे – हिन्द में नकाब हर चेहरे पे है
हैरानगी होती नहीं , अब किसी शरारत पे।।